शब्द–ब्रह्म
ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जून 2013

बौद्धदर्शन के प्रतीत्यसमुत्पाद में विज्ञान तथा सामाजिक मूल-तत्वों की अवधारणा

डॉ. मनीष मेश्राम
सहायक प्राध्यापक,
स्कूल ऑफ बुद्धिस्ट एंड सिविलाइजेशान,
गौतम बुद्ध यूनिवर्सिटी, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश

"प्रतीत्यसमुत्पाद" भगवान बुद्ध के उपदेशों का आधारभूत सिद्धांत है। भारतीय दर्शन की यह विशेषता रही है की यहाँ का दार्शनिक संसार को दु:खमय मानकर दु:खों के कारणों को जानने का प्रयास करता है। तथागत बुद्ध भी भारतीय श्रमण-परंपरा मनीषा की इसी सुदीर्घ परम्परा का अनुसरण करते हैं। तथागत बुद्ध के उपदेश उनके द्वारा प्रतिपादित 'चार आर्य सत्यों' मे निहित हैं। दु:ख के कारणों का विश्लेषण बुद्ध ने अपने द्वितीय आर्य सत्य में प्रतीत्यसमुत्पाद के आधार पर किया है। इसे भवचक्र तथा द्वादश निदान भी कहते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद कार्यकारणवाद है। जब हम प्रतीत्यसमुत्पाद का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि यह दो शब्दों के योग से बना है – 'प्रतीत्य' एवं 'समुत्पाद'। 'प्रतीत्य' का अर्थ है किसी वस्तु का उपस्थित होना एवं 'समुत्पाद' का अर्थ है किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद का व्युत्पत्तिलब्ध अर्थ हुआ – एक वस्तु के उपस्थित होने पर किसी अन्य वस्तु की उत्पत्ति। कारणता से संबन्धित इस बौद्ध-सिद्धांत का मूल मन्तव्य है प्रत्येक कार्य सकारण होता है। कार्य सदा कारण सापेक्ष होता है। कारण के होने पर ही कार्य होता है तथा कारण के न रहने पर कार्य भी नहीं रह सकता है न ही उत्पन्न हो सकता है। दु:ख संसार है तथा दु:खनिरोध निर्वाण। सापेक्ष दृष्टि से प्रतीत्यसमुत्पाद दु:खमय संसार है एवं पारमार्थिक दृष्टि से प्रतीत्यसमुत्पाद प्रपंचोपशम और निर्वाण है।

सम्पूर्ण भारतीय धर्म, दर्शन और चिंतन में बौद्ध धम्म और दर्शन का अपना एक स्थान है। उसका अपना एक अलग महत्व है। इस बात को सभी स्वीकार करते हैं। हर भारतीय दर्शन की अपनी-अपनी विशेषताएं हैं। उसी प्रकार बौद्ध धम्म और दर्शन की भी अपनी विशेषताएँ हैं, जिसके कारण हम बौद्ध धम्म और दर्शन को भारतीय धर्म और दर्शन से एकदम अलग मानते हैं। बौद्ध धम्म और दर्शन भारत के अन्य किसी धर्म और दर्शन की एक शाखा है इस मान्यता का कोई अर्थ ही नहीं रहता है। यह बात सही है कि बौद्ध धम्म और दर्शन तथा अन्य भारतीय धर्म और दर्शन भारत की ही भूमि में पैदा हुये हैं, फले-फूले हैं, उसी प्रकार भारत की एक ही सामाजिक, संस्कृतिक, राजनीतिक, आर्थिक स्थिति में पैदा हुये है, फ्लै-फूले हैं। साथ-साथ रहे हैं। इसीलिए एक-दूसरे को प्रभावित करना और स्वयं

प्रभावित होना स्वाभाविक है। एक-दूसरे से समांतर दूरियां भी बनाकर रखी है। आधुनिक युग के सामाजिक संदर्भों में बौद्ध धम्म और दर्शन अन्य भारतीय धर्मों और दर्शनों से अपनी अलग पहचान रखता है।

बौद्ध धम्म और दर्शन आधुनिक विज्ञान तथा आधुनिक समाजशास्त्र का ही प्रतिपादन करता है। आधुनिक विज्ञान और आधुनिक समाजशास्त्र के जो बुनियादी सिद्धांत हैं उनकी नींव आज से ढाई हजार साल पहले तथागत भगवान बुद्ध ने रखी थी। बौद्ध धम्म और दर्शन उसी नींव पर विकसित हुआ। इसीलिए जब हम आज बौद्ध धम्म और दर्शन की बात करते हैं तब हमे इसकी नींव को जानने का निश्चित रूप से प्रयास करना चाहिए। क्योंकि बौद्ध धम्म और दर्शन के विकास में कुछ इस तरह की भी बातें सम्मिलित हो गई हैं जो बौद्ध धम्म और दर्शन की मूल प्रेरणा के विरुद्ध है। लेकिन जब बौद्ध धम्म और दर्शन का विकास हो रहा था, बौद्ध धम्म समाज के हर वर्ग में, जाति-जमातों में जा रहा था तब उसमे कई बातों का प्रवेश होना, जो बौद्ध धम्म और दर्शन की मूल प्रेरणा विरुद्ध थे स्वाभाविक ही था। फिर भी बौद्ध धम्म और दर्शन के वैश्विक रूप लेते हुए भी अपनी मूल प्रेरणा को बरकरार रखा, यही बौद्ध धम्म और दर्शन की विशेषता है। जिसके कारण आज के वैज्ञानिक युग मे भी बौद्ध धम्म और दर्शन को वैज्ञानिक धम्म और दर्शन कहा जाता है, उसी प्रकार उसको मानवतवादी, समतावादी, लोकतन्त्रवादी, बुद्धिवादी धम्म और दर्शन कहा जाता है।

प्रतीत्यसमुत्पाद एवं विज्ञान

"प्रतीत्यसमुत्पाद" बौद्ध धम्म एवं बौद्ध दर्शन रीढ़ जैसा माना जाता है। बुद्ध ने इसके महत्व को बताते हुए कहा था जो धम्म को समझता है वो प्रतीत्यसमुत्पाद को समझता है। बुद्ध के इस कथन से प्रतीत्यसमुत्पाद का महत्व और भी बढ़ जाता है। इसीलिए प्रतीत्यसमुत्पाद का ज्ञान अत्यंत आवश्यक है। यह बौद्ध धर्म का मौलिक सिद्धांत माना जाता है। यह सिद्धांत बौद्ध धम्म और दर्शन का एक बुनियादी और बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत है। प्रतीत्यसमुत्पाद को समझे बिना, जाने बिना बौद्ध धम्म और दर्शन को नहीं समझा जा सकता। इसी प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांतकी स्थापना और इसका उपदेश स्वयं भगवान बुद्ध ने दिया था। पाली तिपिटक के विनयपिटक में महावग्ग के महाखन्धक में बुद्ध के बोधि प्राप्ति की कथा है। उसमे भगवान बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के बाद बोधिवृक्ष के नीचे एक सप्ताह तक एक आसान पर बैठकर मुक्ति का आनंद लेते हुये प्रतीत्यसमुत्पाद का अनुलोम और प्रतिलोम मनन किया था[1] इसका वर्णन प्राप्त होता है। इसके उपरांत तथागत बुद्ध ने अनेक बार प्रतीत्यसमुत्पाद की शिक्षा दी जिसका वर्णन सुत्तपिटक के कई निकायों के कई सुत्तों मे प्राप्त होता है। इसमे तथागत बुद्ध कहते है कि, "अविद्या के कारण संस्कार, संस्कार के कारण विज्ञान, विज्ञान के कारण नामरूप, नामरूप के कारण षडायतन, षडायतन के कारण स्पर्श, स्पर्श के कारण वेदना, वेदना के कारण तन्हा, तन्हा के कारण उपादान,उपादान के कारण भाव, भाव के कारण जन्म, जन्म के कारण जरामरन-सोक-

परिदेव-दु:ख-दोमनस्स (चित्त विकार) उपायास (चित्त खेद) उत्पन्न होता है। इस तरह इस सम्पूर्ण दु:खपुंज का जन्म होता है। इस तरह उन्होंने प्रतीत्यसमुत्पाद का अनुलोम मनन किया। फिर उसी का प्रतिलोम मनन किया कि "अविद्या के विनाश से संस्कार का विनाश होता है, संस्कार के विनाश से विज्ञान का विनाश होता है.....उपायास (चित्त-खेद) का विनाश होता है। इस प्रकार इस सम्पूर्ण दु:ख समुदाय का विनाश होता है।"[२] इस प्रतीत्यसमुत्पाद का तथागत बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्ति के बाद पहले सप्ताह मे चिंतन-मनन किया। इस बोधिकथा से यह वस्तुस्थिति स्पष्ट होती है कि तथागत बुद्ध की बोधि या बुद्धत्व प्राप्ति का सम्पूर्ण सार प्रतीत्यसमुत्पाद को जानना है। और प्रतीत्यसमुत्पाद को नहीं जानता, नहीं देखना अज्ञान है। बुद्ध के सम्पूर्ण धम्म, दर्शन, और सामाजिक चिन्तन का आधार प्रतीत्यसमुत्पाद दर्शन है।

इस प्रतीत्यसमुत्पाद दर्शन मे चार बहुत ही महत्वपूर्ण तत्व है। १. प्रतीत्यसमुत्पाद को जानना, देखना, अनुभव करना बोधि है, ज्ञान है, २. अविद्या का कारण है, अविद्या अकारण नहीं है, ३. हर वस्तु की उत्पत्ति का कोई न कोई कारण है, और ४. कारण के नष्ट होने से कार्य नष्ट होता है। इन्हीं चार तत्वों को तथागत बुद्ध ने अपने प्रतीत्यसमुत्पाद के द्वारा समझाया और सिखाया है। इस बोधिकथा में एक बात बहुत ही स्पष्ट और महत्वपूर्ण है कितथागत बुद्ध ने रात के पहले याम में, रात के माध्यम याम मे और रात के अन्तिम याम में प्रतीत्यसमुत्पाद पर अनुलोम, प्रतिलोम चिन्तन-मनन किया है। अर्थात, वे एक रात में तीन बार मनन करते है। इस तरह वे एक सप्ताह में इक्कीस बार मनन करके अपने बुद्धत्व की नींव सबल करते है। इक्कीस बार मनन करने के बाद भी उनको इस सिद्धांत मे कोई असत्यता, मिथ्यात्व नजर नहीं आया । उसके बाद तथागत बुद्ध ने जितने भी उपदेश दिये है और जितने भी सिद्धांत प्रतिपादित किए है वें सभी इसी बुनियाद पर खड़े है इसमे कोई सन्देह नहीं है।

तथागत बुद्ध के धम्म और दर्शन में तिलक्खण अर्थात तीन लक्षणों को बड़ा स्थान है। वे है अनिच्चा, दुख, अनत्ता मतलब अनित्य, दु:ख, अनात्म।[३]बौद्ध धम्म और दर्शन के या तीन बुनियादी तत्व भी प्रतीत्यसमुत्पाद पर ही आधारित हैं। तथागत बुद्ध ने यह भी जाना कि जो उत्पन्न होता है वह नष्ट होता है, नित्य, अमर कुछ भी नहीं है। बौद्ध दर्शन का यहा बुनियादी सिद्धांत पूरी तरह से विज्ञान (Sci ence) पर, विज्ञान की चिन्तन पद्धति पर आधारित है। विज्ञान के सभी सिद्धांत बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत पर आधारित हैं ऐसा कहा जाए तो गलत नहीं है। बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद का मतलब है कारण से कार्य की उत्पत्ति। हर कार्य का, हर घटना का, हर चीज का फिर वह भौतिक हो या अभौतिक, चेतन हो या अचेतन, विचार हो या वस्तु कोई न कोई कारण से ही उत्पन्न होती है। बिना कारण के किसी भी चीज की उत्पत्ति संभव नहीं है। विज्ञान भी किसी भी चीज की उत्पत्ति को अकारण या बिना कारण नहीं मानता है। जीवसृष्टि हो या अजीव सुष्टि हो सभी कुछ कार्यकारण, हेतुप्रत्यय सिद्धांत से बंधे

हुए हैं। और वही संसार के अस्तित्व का नियम है। संसार की छोटी से छोटी चीज भी इस नियम के लिए अपवाद नहीं है। तथागत बुद्ध कहते है दुक्ख का समुदय (कारण, हेतु) है, दुक्ख का निरोध होता है और दुक्ख निरोध का मार्ग है। यही चार श्रेष्ठ सत्य है।

तथागत बुद्ध का यह सिद्धांत भारतीय धर्म और दर्शन में बहुत ही क्रांतिकारी सिद्ध हुआ है। इस प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत ने प्राचीन भारतीय सोच को, चिन्तन परम्परा को, ज्ञान-विज्ञान की चिन्तन परम्परा को ही बदल दिया। बुद्ध ने इस सिद्धांत को बाद के बौद्ध आचार्यों ने, बौद्ध विद्वानों ने जीवन के हर अंग मे लागू किया। बुद्ध के इस सिद्धांत के कारण प्राचीन भारत में एक वैचारिक क्रान्ति का, मानवतवादी, भौतिकवादी, जीवनवादी क्रान्ति का जन्म हुआ। बौद्ध दर्शन के इस सिद्धांत के कारण ईश्वरवाद, आत्मवाद, नित्यवाद, स्थितिवाद, अगतिकवाद का खण्डन हुआ और लोक यथार्थवाद के धरातल पर खड़े होकर सोचने लगे। लोग हर चीज के, हर घटना के कारणों को खोजने लगे और अपने जीवन की, अपनी समस्याओं का समाधान अपने ही पास में देखने लगे। बुद्ध के इस दर्शन से ईश्वरवाद का, आत्मवाद का और पुरोहितवाद का आधार ही लड़खड़ा गया और प्राचीन भारत में ज्ञान-विज्ञान के विकास का, सामाजिक परिवर्तन की चेतना का, सामाजिक जीवन मूल्यों, व्यवस्था परिवर्तन का रास्ता खुल गया। इसी की वजह से बोधिसत्व बाबासाहेब अम्बेडकर ने अपने ग्रंथ Revolution and counter revolution in ancient India (प्राचीन भारत में क्रान्ति और प्रतिक्रांति) में तथागत बुद्ध को प्राचीन भारत का पहला क्रान्तिकारी कहा है।[४]

संसार के किसी भी समाज मे पहले विचारों की क्रान्ति होती है, दर्शन और चिन्तन की क्रान्ति होती है, उसके बाद विज्ञान मे, समाज में, क्रान्ति होती है, व्यक्ति के जीवन में क्रान्ति होती है। बुद्ध से पहले भारत मे विज्ञान मे कोई विशेष कार्य नहीं हुआ था, कोई विशेष वैज्ञानिक सोच विकसित नहीं हुई थी। लेकिक तथागत बुद्ध के बाद भारत में बहुत बड़ी मात्रा में विज्ञान का विकास हुआ। विज्ञान के अलग-अलग विषयों पर ग्रंथ लिखते गये। भारत मे वास्तुशास्त्र, लिपि, औषधिशास्त्र, गणित, रसायनशास्त्र, उपचारशास्त्र, मूर्तिकला, धातुशास्त्र, आदि का विकास हुआ। भारत में बड़े-बड़े वैज्ञानिक पैदा हुए। अर्थात यह माना जाता है कि तथागत बुद्ध के बाद यदि शंकराचार्य के काल तक भारत मे विज्ञान का बड़ा विकास हुआ था और विज्ञान के क्षेत्र मे भारतीय विदद्वानों ने बड़ा काम किया था, बड़ा योगदान दिया। लेकिन शंकराचार्य के 'जगत मिथ्या ब्रहमसत्य' के सिद्धांत के प्रचार के बाद ज्ञान-विज्ञान की बड़ी हानि हुई। मतलब यह है कि प्राचीन भारत में भगवान बुद्ध के इस प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के कारण ज्ञान-विज्ञान का बड़ा विकास हुआ था। संयुक्तनिकाय[५] मे द्वादशांग की चर्चा करते हुए बुद्ध ने प्रतीत्यसमुत्पाद की चार विशेषताए बतायी हैं :

(१) तथता- जो इस सिद्धांत की वस्तुनिष्ठता, सार्वभौमिकता, एवं सर्वकालिकता को

दर्शाती है। चूँकि प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत विभिन्न तथ्यों के परस्पर क्रिया-प्रतिक्रिया से उत्पन्न उत्पत्ति का सिद्धांत हैं। अत: यह किसी तत्वमीमांसीय तत्व (metaphysical ultimate reality)- जैसे औपनिषदिक ब्रह्म, लोकयाती भूतद्रव्य, आजीविकीय स्वभाव और सान्ख्यीय प्रकृति, जो अपने-अपने तरीके से सभी प्रकार की जागतिक क्रिया-प्रतिक्रिया व्यापार एवं हमारे अनुभवों में अनुस्यूत माने जाते हैं- का निराकरण करता है। पुन: चूँकि यह सिद्धांत वस्तु जगत की यथास्थिति का आख्यान करता है, इसीलिए यह सत्य की अनुकूलता और वस्तुनिष्ठता का सिधान्त है। इस प्रकार प्रतीत्यसमुत्पाद तथता, धर्मता और सत्य का सिद्धांत है।

(२) अवितथता (necessity), यह प्रतीत्यसमुत्पाद की दूसरी विशेषता है जिसके अनुसार आवश्यक प्रत्ययों के एकत्र होने पर कार्य की उत्पत्ति बिना अपवाद के यानि नियमत: एवं अनिवार्यत: होती है। यह प्रक्रिया किसी बाह्य शक्ति की कृपा या हस्तक्षेप की मोहताज नहीं होती।

(३) अनञ्जथता (invariability), यह प्रतीत्यसमुत्पाद की तीसरी विशेषता है, जिसके अनुसार निरपवाद रूप से एक निश्चित कारणकुंज से एक निश्चित कार्यकुंज की उत्पन्न होता है। इसका यह कदापि अर्थ नहीं कि किसी निश्चित, स्थिर, एकरूप कारणद्रव्य से एक निश्चित, स्थिर, एकरूप कार्यद्रव्य की पैदा होता है। दूसरी ओर इससे उच्छेदवाद और यदृच्छेवाद का भी खण्डन होता है।

(४) इदप्पच्चयता (conditionality, mutual, dependence) यह विशेषता प्रतीत्यसमुत्पाद के मूल अर्थ को प्रकट करती है और इसी संदर्भ में यह प्रतीत्यसमुत्पाद के सामान्य नियम को भी बताती है। यह मात्र अनुक्रमण (succession) साहचर्य (association) और निरन्तरता (invariability) का सिद्धांत नहीं है और न एकत्ववादियों का विवर्तवादी या अभिव्यक्तिवादी सिद्धांतहै। इस तरह कारण कार्य में न तो समवेत है, न कार्य मात्र विवर्त है और न ईश्वरेच्छा जनित ही है।

मज्जीम निकाय के सम्मदीट्ठी- सुत्त[६] में प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत को सम्यक दृष्टि के संदर्भ में समझाया गया है। सरिपुत्त कहते हैं- उत्तम सावक अकुशल को जानता है, अकुशल मूल को जानता है, कुशल को जानता है, कुशल के मूल को जानता है, इससे..... सम्यक दृष्टि होती है.... क्या है अकुशल ? क्या है अकुशल मूल ? क्या है कुशल ? क्या है कुशल मूल? और इसका उत्तर दिया जाता है, पाणातिपाता (हिंसा) अकुशल है, आदिन्नदान (चोरी) अकुशल है... मिथ्या दृष्टि अकुशल है...' मतलब इसमें कुशल और अकुशल के कारण हैं। इस बात को प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के आधार पर समझाया गया है। इस सुत्त में 'अरिय अट्टांगिक मग्ग' को इसी प्रतीत्यसमुत्पाद के सिधान्त के आधार पर समझाया गया है। उसी प्रकार मज्जीम निकाय के चुलसिहनाद सुत्त[७] में भी प्रतीत्यसमुत्पाद को समझाया गया है। इस सुत्त में चार उपादान को तृष्णा के संदर्भ में समझाया

गया है। तृष्णा है उसका कारण है, वेदना है उसका कारण है...। मज्जीम निकाय के महादुक्खक्खन्ध सुत्त[८] में भी कामभोगों के दुष्परिणामों को प्रतीत्यसमुत्पाद के द्वारा समझाया गया है। उसी प्रकार मज्जीम निकाय के महातन्हासंखय सुत्त[९] (९) मे भी बुद्ध ने कहा, भिक्षुओ! जिस-जिस प्रत्यय (कारण,निमित्त) से विज्ञान (चेतना) उत्पन्न होती है, वही वही उसकी संज्ञा होती है। चक्षु के निमित्त से रूप में जो विज्ञान उत्पन्न होता है, चक्षु विज्ञान की उसकी संज्ञा है....। जिस-जिस निमित्त को लेकर आग लगती है, वही-वही उसकी संज्ञा होती है। इस सुत्त में भी प्रतीत्यसमुत्पाद सिद्धांत की स्थापना है। मतलब सम्पूर्ण बौद्ध धम्म और दर्शन प्रतीत्यसमुत्पाद कि नींव पर स्थापित है। इसीलिए बौद्ध दर्शन एक तरह से विज्ञान (sci ence) ही है।

प्रतीत्यसमुत्पाद एवं सामाजिक मूल-तत्व

तथागत बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत ने भारत की सामाजिक समस्यायों को समाजशास्त्रीय समस्याओं को हल करने में बड़ा सहयोग किया है। बुद्ध का, बौद्ध दर्शन का अपना समाजशास्त्र जो भारत के वर्णवादी, विषमतावादी समाजशास्त्र से एकदम भिन्न है। बुद्ध केवल धम्मपुरुष ही नहीं हैं बल्कि वे समाजसुधारक पुरुष भी हैं। उनका अपने समय की समस्याओं पर पूरा ध्यान था। पालि तिपिटक के सुत्तपिटक के विभिन्न निकायों मे संग्रहीत सुत्तों के अध्ययन से इस बात का पता चलता है की तथागत बुद्ध ने भारत के वैदिक समाजशास्त्र का बिलकुल विरोध किया था। तथागत बुद्ध ने भारत की सामाजिक समस्याओं को भी प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के आधार पर ही समझा था और समझाया था। बुद्ध का समाजशास्त्र प्रतीत्यसमुत्पाद के दर्शन पर ही आधारित है।

मज्जिम निकाय के माधुरीय सुत्त[१०] में वर्णव्यवस्था, जातिवाद का खण्डन किया गया है। इस सुत्त में मथुरा के राजा अवन्ति पुत्र और आयु, महाकच्चान के बीच संवाद है। राजा अवन्तिपुत्त ने भद्न्त महाकच्चान से पूछा- "भो कच्चान! ब्राह्मण कहते है- ब्राह्मण ही ऊँचा वर्ण है और अन्य वर्ण हीन (नीच) है, ब्राह्मण ही उजाला वर्ण है, और अन्यवर्ण काला है, ब्राह्मण ही शुद्ध होते है, अब्राहमण नहीं... ब्राह्मण ही ब्रह्मा के दायाद हैं अन्य नहीं।" इस सवाल का जबाव भद्न्त महाकच्चान ने कारण देकर दिया है। किसी के श्रेष्ठ होने का भी कारण होता है और किसी के नीच होने का भी कारण होता है। इस सुत्त में चारों वर्ण के समसमान होने के सिद्धांत की स्थापना की गई है। उसी प्रकार वर्ण या जाति उच्च या नीच नहीं होती बल्कि अपनी गुणों से, कर्मों से उच्च या नीच होता है इस सिद्धांत को भदन्त महाकच्चान ने स्थापित किया है। तथागत बुद्ध का समाजशास्त्र व्यक्ति को केन्द्र मानता है, जाति या वर्ण को नहीं। इस सुत्त के अनुसार मनुष्य के उच्च होने का कारण है उसका अच्छा कर्म और मनुष्य का नीच होने का कारण है उसका नीच कर्म। बौद्ध दर्शन के अनुसार नीच कर्म है प्राणी हिंसा, मिथ्याचार, झूठ बोलना, आदि

और अच्छे कर्म है प्राणी हिंसा से दूर, चोरी से दूर, मिथ्या चार से दूर आदि।

मज्जिम निकाय के कण्णत्थलक सुत्त[11] में भी वर्णव्यवस्था का खण्डन है। इस सुत्त में भी कारण से कार्य के सिद्धांत के आधार पर ही चारों वर्णों में समानता के समाजशास्त्र का प्रतिपादन किया गया है। इस सुत्त में तथागत बुद्ध और कोसल राजा प्रसेनजीत के बीच संवाद है। मज्जिम निकाय के अस्सलायन सुत्त[12] में भी वर्वव्यवस्था, जातिव्यवस्था का खण्डन है। स्त्री की कोख में गर्भ कैसे ठहरता है इस बात को कार्य कारण सिद्धांत के आधार पर स्पष्ट किया गया है। इस सुत्त में ब्राह्मणवाद, वर्णवाद का खण्डन भी है और कार्यकारण सिद्धांत की स्थापना भी है। उसी प्रकार वासेठ्सुत्त[13] में भी जातिवाद, वर्णवाद का खण्डन है, ओर जो सभी प्रकार के बन्धनों को तोड़ने वाला है, शीलवान है... उसी की महान, श्रेष्ठ समानता के मूल्य और मानवी स्वतन्त्रता के सिद्धांतों पर आधारित है। इस सुत्त में तथागत बुद्ध ने कर्म से, कार्य से, गुणों से मनुष्य के श्रेष्ठ होने के सिद्धांत की स्थापना की है। यहाँ बौद्ध समाजशास्त्र जन्म, जाति वर्ण को नकारता है और कर्म के सिद्धांत को मानता है। बौद्धों का समाजशास्त्र, वैदिकों के, ब्राह्मणों के समाजशास्त्र से पूरी तरह भिन्न है। इस सुत्त में कहा गया है-

एवमेत यथाभूत, कम्म पस्संती पण्डिता।

पटीच्चसमुप्पाददस्सा, कम्मविपाककोविदा ॥

अर्थात प्रतीत्यसमुत्पाद को देखने वाले और कर्म के परिणामों को देखने, जानने वाले बुद्धिमान लोग इस प्रकार कर्म को वास्तव में, यथाभूत जानते हैं। इसका मतलब प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत कर्म के सिद्धांत से जुड़ा हुआ है, कार्यकारण के सिद्धांत से जुड़ा है। और जो प्रतीत्यसमुत्पाद को जानते है वे ही कर्म के सिद्धांत को जानते हैं। तथागत बुद्ध का कर्म-सिद्धांत ब्राह्मणी धर्म के कर्म-सिद्धांत से एकदम भिन्न है, अलग है। उसी प्रकार जिस तरह संसार कर्म से बंधा हुआ है। इस बात को स्पष्ट करते हुये बुद्ध इसी सुत्त के अंत में कहते हैं-

कम्मुना व-तति लोको, कम्मुना व-ताति पजा।

कम्मनिबन्धता सत्ता, रथस्साणीव यायतो॥

लोक अर्थात संसार कर्म से चल रहा है, प्रजा अर्थात लोक कर्म से चल रहे है, चलते हुये रथ के चक्के की तरह प्राणी कर्म से बंधे हैं। इसमें भी प्रतीत्यसमुत्पाद की ही स्थापना है। अच्छे फल का कारण अच्छा कर्म, बुरे फल का कारण बुरा कर्म, मतलब फल का कारण कर्म है और कर्म का फल प्ररिणाम है। फल और कर्म दोनों एक-दूसरे से संबधित है। इसीलिए कुशल कर्म करने के लिए प्रेरित करना ही बुद्ध का समाजशास्त्र है। तथागत बुद्ध का समाजशास्त्र, समाजचिंतन केवल व्यक्ति और समाज का, उसके क्रियाकलापों का वर्णन ही नहीं करता बल्कि व्यवस्था को, समाज को, व्यक्ति को बदने की प्रेरणा भी देता है। बुद्ध का समाजशास्त्र व्यक्ति और समाज दोनों को

समान महत्व देता है। बुद्ध की शिक्षाएं, उनका उपदेश, उनका धम्म और दर्शन व्यक्ति और समाज दोनों के लिए है।

पालि तिपिटक साहित्य में व्यक्ति की विशुद्धि, कुशल जीवन, शील सदाचार, त्याग, सहिष्णुता, दया, करुणा, मैत्री का उपदेश भी है जो एक व्यक्ति के उत्थान की दृष्टि से, व्यक्ति की विशुद्धि की दृष्टि से, निर्वाण को प्राप्त करने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है और पालि साहित्य में वर्णवाद, जातिवाद, जन्म जाति पर आधारित उच्चतावाद, नीचतावाद का पूर्णतः खण्डन किया है। क्योंकि वर्णवाद, जातिवाद, ब्राह्मण वर्ण श्रेष्ठत्व का सिद्धांत व्यक्ति की विशुद्ध जीवनचर्या से संबन्धित वाद, विचार का सिद्धांत नहीं है। बल्कि यह सामाजिक जीवन से सम्बन्धित है, समाज व्यवस्था से संबन्धित है। और इस बात की ओर इस सामाजिक समस्या की ओर बुद्ध प्रतीत्यसमुत्पाद की दृष्टि से ही देखते हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के अनुसार जाति की उत्पत्ति का, वर्ण की उत्पत्ति के, ब्राह्मण वर्ण श्रेष्ठत्व की उत्पत्ति का, अब्राहमण वर्णों की नीचता की उत्पत्ति का कोई न कोई कारण तो जरूर होना चाहिए। बिना कारण, बिना हेतु कुछ भी उत्पन्न नहीं होता है। फिर बिना कारण जाति, वर्ण, वर्ण श्रेष्ठत्व, वर्गनीचता कैसे उत्पन्न हो सकती है? यही महत्वपूर्ण सवाल है और इसका जवाब बौद्ध धम्म तथा दर्शन के पास है।

तथागत बुद्ध के दर्शन का जवाब है कि जाति, वर्ण, वर्ण श्रेष्ठत्व, वर्ण नीचता अकारण नहीं है। यह अपने आप पैदा नहीं हुए हैं। प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के द्वारा हम जाति वर्ण की उत्पत्ति के कारणों को खोज सकते हैं। इस दृष्टि से यह प्रतीत्यसमुत्पाद का सिद्धांत बहुत ही महत्वपूर्ण है। यह विज्ञान का सिद्धांत भी है और समाजशास्त्र का सिद्धांत भी है। इसी प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत के द्वारा हम सत्य को, यथार्थ को खोज सकते हैं। उसी प्रकार इसी सिद्धांत के माध्यम से हम विशुद्धि को प्राप्त कर सकते हैं और समतावादी समाज का, सभी वर्ण समान, सभी जाती समसमान वाले समाज का निर्माण कर सकते है। जाति विरहित समाज का निर्माण कर सकते हैं। लोगों को उस तरह की प्रेरणा दे सकते हैं। आधुनिक भारत मे, आधुनिक संसार में समतावादी समाज के निर्माण के लिए, मानवातावादी समाज के निर्माण के, बुद्धिवादी समाज के निर्माण के लिए ज्ञान और विज्ञान के विकास के लिए तथागत बुद्ध का धम्म और दर्शन हमारे लिए पुरी तरह से उपयोगी है, अनुकूल है, परिवर्तनवादी है इसमें कोई संदेह नहीं है।

प्रतीत्यसमुत्पाद का सामान्य रूप एक अत्यंत संक्षिप्त रूप है। इसी को पंचनिदान, दशनिदान और द्वादशनिदान के रूप में अधिक विस्तार से कहा जा सकता है। द्वादश निदान भी विस्तृत नहीं है। परन्तु इसकी प्रत्येक कड़ी मानव जीवन की श्रंखला में प्रत्येक अवस्था के प्रतीत्यसमुत्पन्न रूप को दर्शाती है। यहौ तक की अविद्या भी जो सामन्यातः प्रथम कड़ी मनी जाती है अप्रतीत्यसमुत्पन्न नहीं, जैसा कि सांख्य-योग में मान्य है। अविद्या भी पूर्व-जन्म के आसव (defilements) से प्रतीत्यसमुत्पन्न है।

द्वादशनिदान एक चक्रीय व्यवस्था है, जो स्वरूपत: त्रिकालीय है, जिसे संबोधी और सदाचार के माध्यम से उलटने का यह प्रयास है। इस प्रक्रिया में सभी एकत्ववादी, उच्छेदवादी, नियतिवादी, आदि मान्यताये न केवल ध्वस्त होती है, बल्कि यह तथ्य भी उभर कर सामने आता है कि द्वादशनिदान मूलत: मानव जीवन (human personality) की उत्पत्ति, प्रक्रिया एवं व्यापार तथा उससे जनित दुख और मुक्ति की प्रतीत्यसमुत्पादीय व्याख्या करता है तथा मानव के स्वयं के प्रयासों से दु:ख से निवृति तथ परम सुख, शांति और निर्वाण प्राप्ति की निश्चितता को स्थापित करता है।

आधुनिक विश्व अनेक प्रकार की समस्याओ से घिरा हुआ है, जो समस्याएँ मनुष्य के जीवन में अनेक प्रकार के दु:ख को जन्म दे रही है। दु:खों की वृद्धि का एकमात्र कारण नासमझी, अज्ञान और बुद्ध की भाषा में सम्यक दृष्टि का अभाव कहा जा सकता है। बुद्ध का धर्म मनुष्य मे सम्यक दृष्टि जिसे कुछ अंशों मे उत्पन्न करता है, उसे वैज्ञानिक दृष्टिकोण भी कहा जा सकता है। यदि आधुनिक मानव के चित्त में सम्यक दृष्टि और उसके फलस्वरूप कुशल चित्त एवं कुशल कर्मो का उत्पाद हो जाता है तो आधुनिक विश्व में उत्पन्न समस्याएँ स्वत: ही समाप्त हो जायेंगी। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि तथागत बुद्ध के प्रतीत्यसमुत्पाद के सिद्धांत आधुनिक विज्ञान और समाज से मेल खाता है और यह अनेक वैज्ञानिकों की मान्यता है कि विश्व मे अगर कोई धर्म है जो विज्ञान के संगत है वह सिर्फ बुद्ध का धम्म ही है। इसी भाव से प्रेरित होकर आधुनिक युग के अनेक वैज्ञानिकों ने बुद्ध एवं उनके धम्म की भूरी-भूरी प्रशंसा की है। और भारत के संविधान निर्माता बोधिसत्व बाबासाहेब अम्बेडकर ने स्वतन्त्रता, बंधुता और समानता पर आधारित गणतन्त्र-भारत की स्थापना की है। जो पूर्ण विश्व में बुद्ध के सत्य, शान्ति और मानवता का सन्देश युगों-युगों तक प्रकाशित करती रहेंगी।

संदर्भ

१. 1 महावग्गपाडि, विनयपीटक (वि.वि.वि. इगतपुरी), खण्ड ८९, पृ.१
२. 2 वही, पृ.१-२
३. राहुल सांकृत्यायन, बौद्ध संस्कृति, पृ.१२
४. 4 डॉ. अम्बेडकर, प्राचीन भारत में क्रांति और प्रतिक्रांति
५. संयुक्तनिकाय, खण्ड-२ पृ.२६
६. मज़्जिम निकाय, सम्मादिट्टी सुत्त, १.२.९
७. मज़्जिम निकाय, चूलसीहवाद सुत्त, १.२.१
८. मज़्जिम निकाय, महादूक्खक्खन्ध सुत्त, १.३.८
९. मज़्जिम निकाय, महाहत्थीपदोपम सुत्त, १.३.८
१०. मज़्जिम निकाय, महातन्हासंखय सुत्त, १.४.८
११. मज़्जिम निकाय, कण्णत्थल्क सुत्त, २.४.१०
१२. मज़्जिम निकाय, अस्सलायन सुत्त, २.५.३
१३. मज़्जिम निकाय, वासेट्ट सुत्त, २.५.८